C20 भारत 2023 पर्यावरण के लिए जीवनशैली (LiFE) कार्यकारी समूह

LiFE हमारी जिम्मेदारी है

नीति विवरण

CIVIL 20 INDIA 2023
#YouAreTheLight

योजकः

G20 भारत 2023 INDIA

C20 के LiFE कार्य समूह का तर्क है कि वैश्विक रूप से पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए सांस्कृतिक और मूल्य-आधारित परिवर्तन की आवश्यकता है।

विषय सामग्री

1. कार्यकारी सारांश 4

2. परिचय 5

3. पर्यावरण के लिए जीवनशैली (LiFE) 5

4. LiFE के घटक @ पिछले G20 में 8

5. भारत की अध्यक्षता में C20 के लाइफ कार्यकारी समूह 9

6. सुझाव तथा आशय 9

कार्यकारी सारांश

LiFE (पर्यावरण के लिए जीवनशैली) जो की C20 का एक कार्यकारी समूह है और यह समूह ये मानता है कि वैश्विक रूप से पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए सांस्कृतिक तथा मूल्य आधारित परिवर्तन की आवश्यकता है। इस परिवर्तन के बारे में ही LiFE में बताया गया है। भारत तथा वैश्विक दक्षिण के कई देशों के पास पर्यावरण को बेहतर बनाने तथा टिकाऊपन वाली परंपरा की महान विरासत मौजूद है।

LiFE कार्य समूह ने देशों की प्रगति का मार्गदर्शन तथा मूल्यांकन करने के लिए एक मूल्य-आधारित स्थिरता ढांचा तैयार करने की सिफारिश की है। वैश्विक हित यानी सुमंगलम इस ढांचे का सार्वभौमिक सिद्धांत होगा। इस ढांचे में व्यक्तियों तथा समुदायों के लिए मूल्यों, अवधारणाओं, उपकरणों और कार्रवाई का एक समूह शामिल होगा। यह टिकाऊपन के विषय पर एक अत्यंत आवश्यक समग्र दृष्टिकोण लाएगा।

उदाहरण के लिए, किसी भी प्राकृतिक संसाधन का उपयोग करने की भारतीय शैली (यानी पारंपरिक भारतीय शैली) काफी मितव्ययी है, यानी प्रकृति से केवल वही लेना चाहिए जिसकी आपको आवश्यकता है तथा आप जितना लेते हैं उससे अधिक प्रकृति को वापस देने का प्रयास होना चाहिए। यह परम्परा दक्षिणी विश्व के लगभग सभी देशों में देखा गया है । इसी प्रकार, 'परिवार' व्यवस्था को पहचानना और उसे मजबूत करने के लिए सामूहिक प्रयास करना बहुत महत्वपूर्ण है, जो सदियों से व्यक्तियों और समुदायों को प्रभावी ढंग से मूल्य-आधारित शिक्षा और आचरण प्रदान करने में भूमिका निभा रहा है।

मूल्यों के समूह में करुणा, कृतज्ञता, विविधता का सम्मान, जिम्मेदारी की भावना, विकेंद्रीकरण, सद्भाव, स्थानीय संसाधनों का उपयोग करना (तथा दूर के स्थानों से नहीं लेना) आदि विशेषताएं शामिल होंगी। व्यवहार संकेतक, लक्ष्य और प्रगति के स्तर को भी मूल्यों के समूह से परिभाषित किया जा सकता है। मूल्य-आधारित स्थिरता ढांचे के साथ LiFE वैश्विक पर्यावरण प्रशासन में अधिकार आधारित दृष्टिकोण से जिम्मेदारी-आधारित दृष्टिकोण में आदर्श बदलाव लाएगा।

LiFE सांस्कृतिक परंपराओं, प्रथागत प्रथाओं, जमीनी स्तर के नवाचारों तथा पर्यावरण के प्रति जागरूक समकालीन कार्यों में निहित अच्छी, वांछनीय आदतों का एक समूह है। LiFE वैश्विक पर्यावरण प्रशासन के वैज्ञानिक, राजनीतिक तथा आर्थिक उपायों का सहयोगी बन सकता है। हालाँकि इसके लिए सरकार तथा समाज के बीच घनिष्ठ सहयोग की आवश्यकता होगी जिसमें सरकार की अपेक्षा समाज की जिम्मेदारी थोड़ी अधिक होगी।

कार्य समूह ने LiFE के सिद्धांतों की पहचान करने के लिए गहनता से विचार-विमर्श किया है। यह नीति कार्यकारी समूहों के सुझावों समेत CSO के एक पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण तथा शिक्षण गठबंधन को प्रस्तुत करती है, जो भविष्य में G20 अध्यक्षता और अन्य बहुपक्षीय मंचों में LiFE पर काम करना जारी रखेगी।

परिचय

भारत की G20 में अगुवाई (अध्यक्षता), दक्षिणी विश्व के लिए एक अनोखा अवसर है। इंडोनेशिया, भारत, ब्राज़ील की वर्तमान तिकड़ी दक्षिणी विश्व के कुछ प्रमुख मुद्दों को G20 के मंच पर चर्चा तथा नीति विकास के लिए ला सकती है। वैश्विक पर्यावरण प्रशासन में सांस्कृतिक और मूल्य-आधारित परिवर्तन उन क्षेत्रों में से एक है जिसके लिए ये तीन देश अपनी महान संस्कृतियाँ तथा टिकाऊ परंपरा के लिए जाने जाते हैं, ये आपस में तालमेल बिठा सकते हैं।

पर्यावरण पर मानवीय प्रभावों को कम करने के उद्देश्य से कई अंतर्राष्ट्रीय बहुपक्षीय रूपरेखा सम्मेलन मौजूद हैं। ये रूपरेखा सम्मेलन पर्यावरण को बेहतर बनाने के वैज्ञानिक, आर्थिक तथा राजनीतिक उपाय प्रदान करते हैं। इन सम्मेलनों को बनाने और लागू करने में वैश्विक समुदाय द्वारा किए गए भारी संसाधनों और प्रयासों के बावजूद इन संस्थाओं की प्रभावशीलता सीमित है।[1]

GHG उत्सर्जन में वृद्धि, वैश्विक तापमान और समुद्र स्तर में वृद्धि, वायु, जल और मिट्टी का प्रदूषण, जैव विविधता विलुप्त होने और मरुस्थलीकरण की अभूतपूर्व दर तथा कई अन्य वैश्विक पर्यावरणीय समस्या के लक्षण हैं। यह बताने की आवश्यकता है कि पर्यावरण के लिए अधिकांश अंतर्राष्ट्रीय ढांचा सम्मेलनों का उद्देश्य इन लक्षणों को कम करना है। यह स्वाभाविक है कि जब तक समस्या के मूल कारणों पर ठोस वैश्विक कार्रवाई नहीं होगी, लक्षणों के समाधान के परिणाम सीमित होंगे।

लालच, स्वार्थ तथा उदासीनता वैश्विक पर्यावरणीय समस्याओं का मूल कारण है। इसलिए केवल इन लक्षणों को संबोधित करने के वैज्ञानिक, राजनीतिक तथा आर्थिक साधन पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए पर्याप्त नहीं हैं। हमें मूल कारण को संबोधित करने के लिए सांस्कृतिक तथा मूल्य-आधारित परिवर्तन की आवश्यकता है।

पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए व्यक्तिगत नागरिकों तथा नागरिकों के समूह द्वारा जीवन शैली में बदलाव से लेकर टिकाऊ उपभोग तक का स्वैच्छिक योगदान महत्वपूर्ण है।

पर्यावरण के लिए जीवनशैली (LiFE)

LiFE भारतीय संस्कृति (भारत की महान सांस्कृतिक विरासत)का प्रतीक है। यह संस्कृति, परंपराओं, प्रथागत प्रथाओं, जमीनी स्तर के नवाचारों और (पर्यावरण की दृष्टि से) जागरूक समकालीन प्रथाओं में निहित है। भारत और वैश्विक दक्षिण के कई अन्य देशों के पास पर्यावरण चेतना की एक महान विरासत है। यह असंहिताबद्ध रूप (कई समुदायों, व्यक्तियों, अभ्यासकर्ताओं के साथ मौखिक रूप में विद्यमान समृद्ध लोक ज्ञान) तथा संहिताबद्ध रूप (वेद, संहिता, आरण्यक, उपनिषद आदि के रूप में ग्रंथ) रूपों तथा हजारों जमीनी स्तर के नवाचारों रूप में मौजूद होकर स्थानीय स्तर पर उत्पादन-प्रसंस्करण-खपत समस्याओं को प्रकाशित करने का काम कर रहा है।

1 Reports of COPs of UNFCCC, Convention on Biodiversity, Convention on Combat Desertification attest the limited results.

LiFE – संहिताबद्ध

'भूमि सुपोषण' कृषि विमर्श सम्बन्धित एक नया शब्द है। हालाँकि, एक अवधारणा के रूप में, ये उतना ही पुराना है जितना कि भारतीय कृषि , यानी कम से कम 8000 वर्ष पुराना ऋग्वेद काल के समय का। भूमि सुपोषण एक अभिन्न दृष्टिकोण है जो धरती मां को नुकसान पहुंचाए बिना उत्पादकता में सुधार को सुनिश्चित करता है। यह भूमि और कृषक के बीच माँ-बेटे के रिश्ते को दर्शाता है जैसा कि अथर्ववेद में भूमिसूक्त के एक श्लोक "माता भूमि पुत्रो अहम् पृथिव्या" में व्यक्त किया गया है। इसी तरह पर्यावरण-कृषि पर कई प्राचीन ग्रंथ और पुस्तकें हैं, जैसे कि कृषि सूक्ति, वृक्षायुर्वेद आदि। भूमि सुपोषण वर्तमान समय में पारंपरिक कृषि ज्ञान को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़ता है, ताकि हमें टिकाऊ कृषि की ओर ले जाया जा सके।

LiFE – असंहिताबद्ध

राहीबाई पोपेरे एक आदिवासी महिला तथा आदिवासी किसान हैं। उन्होंने औपचारिक स्कूली शिक्षा भी नहीं पूरी की है। अपने अनुभवों के माध्यम से, उन्होंने महसूस किया कि बीज संप्रभुता और पोषण सुरक्षा प्राप्त करने के लिए कृषि जैव विविधता और जंगली खाद्य संसाधनों का संरक्षण समय की आवश्यकता है। बीस साल पहले उन्होंने जलकुंभी बीन के पौधे, चावल, सब्जियां, सेम लैंडरेस की एक नर्सरी शुरू की और उन्हें 7 पड़ोसी गांवों में 210 किसानों तक इसे पहुंचाया। अब तक वह 17 विभिन्न फसलों की लगभग 43 भूमि प्रजातियों का संरक्षण कर रही हैं। उन्होंने घरेलू उपभोग और साल भर उपयोग के लिए एक बारहमासी रसोई उद्यान भी स्थापित किया है। भारत सरकार ने हाल ही में उन्हें भारत के तीसरे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्मश्री से सम्मानित किया है।

LiFE 'जीवन दृष्टि' तथा 'जीवन शैली'- दो पारंपरिक भारतीय (भारतीय) लोकाचार में समाहित है। दोनों आपस में जुड़े हुए हैं। जीवन दृष्टि जीवन शैली को प्रकट करती है और जीवन शैली का अनुभव जीवन दृष्टि को परिष्कृत करता है। इन भारतीय लोकाचारों और इस प्रकार जीवन का लक्ष्य सुमंगलम है, यानी वैश्विक भलाई।

LiFE वैश्विक पर्यावरण को बेहतर बनाने के वैज्ञानिक, राजनीतिक तथा आर्थिक उपायों का पूरक हो सकता है। हालाँकि इसके लिए सरकार तथा समाज के बीच घनिष्ठ सहयोग की आवश्यकता होगी जिसमें सरकार की तुलना में समाज की जिम्मेदारी थोड़ी अधिक होगी।

LiFE का कई SDGs, विशेष रूप से टिकाऊ उत्पादन तथा खपत से संबंधित SDG 12 के साथ घनिष्ठ संबंध है। इस विषय यानी टिकाऊ उत्पादन तथा उपभोग पर वैश्विक चर्चा तुलनात्मक रूप से हाल ही में शुरू हुई है। लेकिन भारतीय लोग तथा समुदाय सदियों से इस दृष्टिकोण का अभ्यास कर रहे हैं।

वैश्विक समुदाय को एक बड़े पैमाने पर यह समझना महत्वपूर्ण है कि कैसे व्यक्ति तथा समुदाय सदियों से प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर रहते थे तथा ऐसी प्रौद्योगिकियां विकसित कीं जो बेहद कम विनाश करने के साथ ही वांछित परिणाम देने में भी सक्षम रही हैं। ऐसी स्थितियों में नागरिक समाज संगठन, समुदाय के इन अनुभवों को वैश्विक पर्यावरण ढांचे के समझौतों तथा उनके संस्थाओ के बीच में लाने के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर सकते हैं।

LiFE की नींव

- भारतीय ज्ञान - यह प्रकृति, पवित्रता और परम वास्तविकता के साथ मनुष्य के संबंधों की निरंतर खोज की परिणति है। हजारों वर्षों से, इस ज्ञान को भारत के पवित्र ग्रंथों जैसे वेद, रामायण, महाभारत, धर्म शास्त्र, अर्थ शास्त्र, नाट्यशास्त्र, सुश्रुत संहिता आदि के माध्यम से समझाया गया है। यह भारतीय शास्त्रीय के साथ भारतीय लोक के मौखिक परंपरा के ज्ञान ढांचे का भी गठन करता है।

- भारतीय संस्कृति के पंच तत्व (पांच मूलभूत तत्व) - वे आकाश (अंतरिक्ष), वायु (वायु), अग्नि (ऊर्जा/अग्नि), आप (जल) तथा , भूमि (पृथ्वी) हैं। ये पांच तत्व ब्रह्मांड की नींव बनाते हैं। अथर्ववेद इस तथ्य पर जोर देता है तथा कहता है कि ब्रह्मांड का निर्माण इन पांच आवश्यक तत्वों के संयोजन का परिणाम है। ऐसा कहा जाता है कि हमारा अस्तित्व इन पांच मूल तत्वों से जटिल रूप से जुड़ा हुआ है।

सतत घरेलू उपभोग के रूप में LiFE

मुंबई ग्राहक पंचायत एक सदस्यता-आधारित उपभोक्ता संगठन है जिसके 32000 सदस्य मुंबई, भारत में स्थित हैं। स्वयंसेवकों के साथ, इसका प्रबंधन पूरी तरह से स्वयंसेवकों द्वारा ही किया जाता है। हर महीने यह अपने सदस्यों के किराने का सामान और आवश्यक घरेलू वस्तुओं की सहकारी खरीद और उसके बाद विकेंद्रीकृत वितरण का संचालन है। सहकारी खरीद और विकेंद्रीकृत वितरण से काफी मात्रा में ऊर्जा तथा जीवाश्म ईंधन की बचत होती है | साथ ही प्लास्टिक के उपयोग को कम करते हैं, घर घर पर्यावरण अनुकूल उत्पाद उपलब्ध कराते हैं, स्थानीय स्तर पर उत्पादि वाले वस्तुओं के उपयोग को भी प्रोत्साहित करते हैं ।

ये सभी एक ऐसी जीवन शैली की ओर ले जाते हैं जो पर्यावरण के प्रति जागरूक तथा इसे बेहतर बनाने के लिए कार्य के लिए भी तैयार है। इसके साथ ही यह अपने सभी सदस्यों में जुड़ाव और सामूहिकता की सोच को बढ़ावा देता है ज का एक अहम् उद्देश्य है ।

पिछले G20 में LiFE के घटक

पर्यावरण तथा वातावरण G20 में चर्चा का विषय रहे हैं। साल 2017 से 2021 तक पिछले 5 अध्यक्षों ने पर्यावरण की सुरक्षा तथा हमारे ग्रह के सुरक्षित भविष्य के प्रति प्रतिबद्धता दोहराई है। ये प्रतिबद्धताएं जलवायु वित्त में सुधार, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, नवीकरणीय ऊर्जा पर निर्भर होने आदि के रूप में हैं। G20 इंडोनेशिया 2022 घोषणा में पोषण, गरीबी, विकास और संरक्षण प्रतिबद्धताओं को एकीकृत किया गया है।

मंत्रिस्तरीय बैठकों के मुख्य सारांश में जीवनशैली तथा पर्यावरण जुड़ाव के कुछ पहलुओं पर विशेष ध्यान था। SDG के स्थानीयकरण के लिए G20 मंच का निरंतर समर्थन एक और प्रतिबद्धता है जो जीवनशैली से संबंधित पहलुओं से जुड़ी है। कृषि मंत्रियों ने खाद्य हानि और बर्बादी के मापन तथा कमी को मापने के लिए तकनीकी मंच के सहयोग की बात की।

विभिन्न G20 देशों ने जीवनशैली को प्रभावित करने वाले विभिन्न पहलुओं से जुड़ी स्थायी निवेश की दिशा में नीतियां विकसित की हैं। इस चर्चा को गहनता से समझने पर पता चलता है कि इनमें से अधिकांश प्रयास सरकारी और औपचारिक संस्था केंद्रित हैं जबकि समाज की भूमिका से इस प्रक्रिया के लाभार्थी और अधिक होंगे।

G20 इंडोनेशिया की बैठक के दौरान, पर्यावरण मंत्रियों ने माना कि सांस्कृतिक विविधता टिकाऊ जीवन का एक स्रोत है। एक तरह से यह भारतीय समाज जैसे सांस्कृतिक रूप से विविध समाजों तथा उनकी टिकाऊ परंपराओं के महत्व की एक आसन्न मान्यता है जो पर्यावरण रक्षा तथा संरक्षण की ओर ले जाती है।

भारत के माननीय प्रधानमंत्री ने वर्ष 2021 में ग्लासगो, यूके में जलवायु सम्मेलन के COP 26 में लाइफस्टाइल फॉर एनवायरमेंट (पर्यावरण के लिए जीवनशैली) (LiFE) आंदोलन की शुरुआत की। उन्होंने विश्व भर के लोगों और संस्थानों से LiFE को एक विनाशकारी उपभोग तथा विनाशकारी रूप में प्रयुक्त करने के बजाय 'सावधान और विचारशील' की दिशा में एक अंतरराष्ट्रीय जन आंदोलन के रूप में चलाने का आह्वान किया।

.

> *"नासमझी और विनाशकारी उपभोग के बजाय, सावधानी और समझदारी से उपयोग करने की दिशा में—"*
>
> *LiFE, एक अंतरराष्ट्रीय जन आंदोलन*

भारत की अध्यक्षता में C20 का लाइफ कार्यकारी समूह

LiFE को भारत की अगुवाई में C20 के कार्यकारी समूह के रूप में पहली बार परिचित करवाया गया है। इसे ऐसे समय में प्रस्तुत किया जा रहा है जब वैश्विक पर्यावरण प्रशासन को सांस्कृतिक और मूल्य-आधारित परिवर्तन की आवश्यकता है।

LiFE कार्य समूह ने अपने विषयगत विचार-विमर्श में 'जीवन दृष्टि' तथा 'जीवन शैली' दोनों पहलुओं को शामिल किया है। कार्य समूह ने 14 उप-विषयों पर विचार-विमर्श किया: जमीनी स्तर पर नवाचार, पंचतत्त्व, युवा, भोजन, भारतीय ज्ञान, फैशन, पानी, आवास, अपशिष्ट, उद्योग, शिक्षा तथा प्रकृति-आधारित समाधान और दो बाहरी कार्यक्रम विशेष रूप से सामुदायिक भागीदारी के लिए (उच्च शिक्षा में छात्रों की सहभागिता कार्यक्रम तथा LiFE-द नंदुरबार वे [तरीका]) थे। विभिन्न सहभागियों ने सम्मेलनों, कार्यशालाओं, पूर्ण सत्रों, प्रस्तुतियों, वेब बैठकों के रूप में समूह के विचार-विमर्श में भाग लिया। इन विचार-विमर्शों में मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया तथा जीवन दृष्टि और जीवनशैली दोनों से संबंधित सुझाव दिए गए।

ये विचार-विमर्श, कुछ सिद्धांतों, सुझावों को तैयार करने, CSO तथा अधिगम गठबंधन का एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने पर केंद्रित था जो कि भविष्य में G20 अध्यक्षता के तथा अन्य बहुपक्षीय मंचों में LiFE पर काम करना जारी रखेगा। भारत की अध्यक्षता में C20 का LiFE कार्य समूह स्थायी जीवन शैली तथा अंततः सुमंगलम् यानी वैश्विक कल्याण की दिशा में व्यक्तिगत और सामुदायिक प्रयासों को आवश्यक गति देने के लिए काम कर रहा है।

इसके उपविषयक विचार-विमर्श के आधार पर LiFE कार्य समूह के सुझाव अधोलिखित हैं।

सुझाव तथा आशय

1. **देशों के प्रगति का मार्गदर्शन तथा मूल्यांकन करने के लिए मूल्य आधारित स्थिरता ढांचा तैयार** :

   • वैश्विक कल्याण यानी सुमंगलम इस ढांचे का सार्वभौमिक सिद्धांत होगा। इस ढांचे में व्यक्तियों और समुदायों के लिए मूल्यों, अवधारणाओं, उपकरणों तथा कार्रवाई का एक हिस्सा शामिल होगा। यह स्थिरता के विषय पर एक अत्यंत आवश्यक समग्र परिप्रेक्ष्य लाएगा। मूल्यों के समूह में करुणा, कृतज्ञता, विविधता का सम्मान, जिम्मेदारी की भावना, विकेंद्रीकरण, सद्भाव, स्थानीय संसाधनों का उपयोग करना (और दूर के स्थानों से नहीं लेना) आदि शामिल होगा। व्यवहार संकेतक, लक्ष्य और प्रगति के स्तर को मूल्यों से परिभाषित किया जा सकता है।

   • मूल्य-आधारित स्थिरता ढांचे के साथ LiFE वैश्विक पर्यावरण प्रशासन में अधिकार आधारित दृष्टिकोण से जिम्मेदारी-आधारित दृष्टिकोण में बदलाव लाएगा।

2. **LiFE के विषय में ज्ञान भंडार का निर्माण करना :**

   • G20 सदस्य देशों को व्यक्तियों, समुदायों तथा व्यावसायिक संस्थाओं के लिए अच्छी प्रथाओं का एक ज्ञान भंडार देना चाहिए। ज्ञान भंडार व्यक्तिगत जीवन शैली, सामुदायिक जीवन शैली में बदलाव लाने के लिए दिशानिर्देश विकसित करने में सहायक होंगे ताकि पारिस्थितिक और कार्बन पदचिह्न को कम करने में मदद करेंगे ।

3. **LiFE के लिए एक आधिकारिक सहभागिता समूह A20 (प्राचीन 20) तैयार करना,** पारम्परिक ज्ञान तथा पैतृक ज्ञान मनीषा**:**

<u>जमीनी स्तर के नवप्रवर्तकों की पहचाना देना (कद्र करना)</u>

"पल्ले सृजन" एक स्वयंसेवी समूह है जो कि भारत के हैदराबाद में स्थित है । यह जमीनी स्तर के नवप्रवर्तकों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए कार्य करता है। पल्ले सृजन नवप्रवर्तकों की पहचान और दस्तावेज़ीकरण के लिए शोध यात्राएं (खोज अभियान) चलाती है। नवप्रवर्तक की पहचान करने के बाद, यह नई खोज के तकनीकी सुधार, सत्यापन तथा उसे पेटेंट कराने के कार्य में सहयोग करता है। अब तक पल्ले सृजना ने लगभग **78** इनोवेटर्स, **1000** से अधिक पारंपरिक प्रथाओं की पहचान की है और उन्हें नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन के साथ पंजीकृत किया है। तीन नवप्रवर्तकों को उनके नवप्रवर्तनों के लिए भारत का तीसरा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार "पद्मश्री पुरस्कार" भी मिल चुका है। पल्ले सृजना पूरी तरह से स्वयंसेवक आधार पर चलता है। समर्पित स्वयंसेवक जो जमीनी स्तर के नवप्रवर्तनों के प्रति जिम्मेदार हैं तथा जमीनी स्तर के नवप्रवर्तकों के प्रति अपार करुणा रखते हैं, यही ही "पल्ले सृजन" के कार्य की मौलिकता /विशेषता है।

• G20 अनुशंसा तंत्र में योगदान देने के लिए A20 को मुख्य रूप से पारंपरिक संस्कृतियों के प्रतिनिधियों और पूर्वजों से प्राप्त ज्ञान संपदा द्वारा मुख्य समन्वय होगा |

• G20 सदस्य देशों को समुदायों और व्यक्तियों को उनकी स्थायी जीवन शैली को प्रोत्साहित करने के लिए वित्त उपकरण तैयार करने चाहिए।

4. मानवता की एक महत्वपूर्ण सम्पदा तथा सभी प्रकार के अंतर्राष्ट्रीय नीतियों में एक अलग समूह के रूप में **जमीनी स्तर के नवाचार को पहचान देना :**

जमीनी स्तर के नवप्रवर्तक मानवता की एक महत्वपूर्ण संपत्ति रहे हैं। वे संसाधन दक्षता और चक्रीय अर्थव्यवस्था की प्रभावशीलता में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। तीन 'R' यानी Reuse, Recycle तथा Repair की वृत्तीय आर्थिकी के छह 'R' में अहम भूमिका है। हालाँकि, बहुत कम देशों ने आधिकारिक तौर पर जमीनी स्तर के नवप्रवर्तकों के महत्व को पहचाना है। उनके योगदान को पहचानने और पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान में उन्हें जोड़ने की तत्काल आवश्यकता है।

5. **स्थानीय उपभोक्ताओं के लिए स्थानीय खाद्य पदार्थों को बढ़ावा देना:**
   • G20 सदस्य देशों को स्थानीय रूप से उगाए गए, प्रसंस्कृत, संग्रहीत और मूल्य वर्धित खाद्य पदार्थों की खपत को बढ़ावा देना और प्रोत्साहित करना चाहिए। यह मानव स्वास्थ्य के साथ-साथ पर्यावरण के लिए भी लाभदायक है। स्थानीय उत्पादन - स्थानीय उपभोग से परिवहन और ऊर्जा की भी बचत होती है। स्थानीय स्तर पर खाया जाने वाला स्थानीय भोजन फसल की स्थानीय किस्मों के संरक्षण में मदद कर सकता है।
6. **तेजी से बढ़ते फैशन के बजाय टिकाऊ तथा हरित (पर्यावरण हितैषी) फैशन को बढ़ावा देना :**

G20 सदस्य देशों को टिकाऊ-हरित फैशन को प्रोत्साहित और बढ़ावा देना चाहिए जो सर्व-समावेशी हो - उत्पाद, प्रक्रियाएं, गतिविधियां और हितधारक (नीति निर्माता, ब्रांड, उपभोक्ता) जिसका लक्ष्य समानता, सामाजिक न्याय, पशु कल्याण पर आधारित कार्बन-तटस्थ फैशन क्षेत्र तथा पारिस्थितिकी अखंडता को प्राप्त करना है। तेज़ी से बढ़ते फ़ैशन के कारण अपशिष्ट निर्माण अधिक मात्रा में और अधिक तेज़ी से होता है। अक्सर इसमें श्रम शोषण, प्रदूषण और संसाधनों की कमी शामिल होती है |

व्यक्तिगत शहरी LiFE का एक मामला

श्री मयूर और श्रीमती सुजाता भावे और उनका परिवार भारत के पुणे शहर के निवासी हैं। छह सदस्यों वाले इस परिवार ने **5** आर सिद्धांतों को अपनाया है - रिफ्यूज, रिड्यूस, रीयूज, रीसायकल तथा रीप्लेनिश। भावे परिवार की बायोगैस **75%** ईंधन आवश्यकता और **100%** अपशिष्ट उपचार को पूरा करने के लिए रसोई के कचरे पर चलती है। मधुमक्खी बक्से के साथ एक छत उद्यान शीतलन प्रभाव प्रदान करता है और आसपास के क्षेत्र में परागण को बढ़ावा देता है। भावे परिवार ने जल बचत के कई तरीको को अपनाया है और उन्हें अपनी जीवनशैली में शामिल किया है। रोजमर्रा की गतिविधियों के पर्यावरणीय बोझ को कम करने के लिए निरंतर सचेत प्रयास **LiFE** की कुंजी है।

- वैश्विक फैशन उद्योग को पूरे विश्व के कार्बन उत्सर्जन का तकरीबन 10 % हिस्सेदार माना जाता है।

– यह अंतर्राष्ट्रीय जहाजों तथा समुद्री जहाजों को मिलाकर होने वाले उत्सर्जन से भी ज्यादा है |

7. **सचेत उपभोग तथा जिम्मेदार निपटान को बढ़ावा देना तथा प्रोत्साहित करना**:
   - अधिकांश विकासशील और उभरते देशों में, अपशिष्ट संग्रहण और पृथक्करण व्यवस्था काफी हद तक अनौपचारिक बनी हुई है। औपचारिक और अनौपचारिक कचरा संग्रहण और पृथक्करण के बीच संबंध को मजबूत किया जाना चाहिए।
   - जागरूकता और शिक्षा की कमी के कारण प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन में बाधा उत्पन्न होती है।

सतत उपभोग में संसाधनों का कम उपयोग करते हुए आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाना शामिल है। लोगों में गौरव और जिम्मेदारी की भावना को को बढ़ावा देना तथा शहरों को साफ रखने में जिम्मेदार निपटान को प्रोत्साहित करने से इस पर काबू पाने में मदद मिल सकती है।

एक CSO पहल के रूप में LiFE

• भारत के महाराष्ट्र राज्य के नंदुरबार जिले में वृक्षारोपण ।

नंदुरबार पश्चिमी भारत में सतपुड़ा पहाड़ों में स्थित एक सुदूर जिला है। नंदुरबार की प्रमुख आबादी आदिवासी और वन पर निर्भर है। LiFE की दिशा में एक कदम के रूप में, जिले के CSOs ने जिले के 25वें स्थापना दिवस (1 जुलाई 2023) पर 25,000 पौधों के वृक्षारोपण की योजना बनाई है।

LiFE पर डिजिटल प्रतिज्ञा

• प्रमुख उच्च शिक्षण संस्थानों और सीएसओ के एक नेटवर्क के सहयोग से C20 के LiFE वर्किंग ग्रुप ने LiFE पर डिजिटल प्रतिज्ञा को सोशल मीडिया प्लेटफार्मों और व्यक्तिगत बैठकों के माध्यम से देश के विभिन्न हिस्सों से सैकड़ों नागरिकों द्वारा LiFE पर डिजिटल प्रतिज्ञा की सुविधा प्रदान की है।

8. **यह पहचानने के लिए कि LiFE पर स्विच करना केवल एक संज्ञानात्मक अभ्यास नहीं है, बल्कि एक सामाजिक-भावनात्मक-नैतिक-आध्यात्मिक भी है:**

   • किसी भी प्राकृतिक संसाधन का उपयोग करने की भारतीय शैली (यानी पारंपरिक भारतीय शैली) मितव्ययिता है यानी प्रकृति से केवल वही लेना जो आपको चाहिए और जितना लेते हैं उससे अधिक वापस देना चाहिए। यह दक्षिणी विश्व के लगभग सभी पारंपरिक समुदायों में मनाया जाता है। हालाँकि हमने इस रास्ते को भुला दिया है।

   • प्रकृति के साथ जुड़ाव तथा पुनः जुड़ाव, व्यावहारिक तथा वास्तविक जीवन के अनुभवों के माध्यम से, तथा सभी स्तरों पर गतिविधि-आधारित शिक्षा के माध्यम से बचपन (यानी 3 से 8 वर्ष की आयु) से ही शुरू होना चाहिए।

   • "परिवार" व्यस्था को पहचान दिलाना और उसे मजबूत करने के लिए सामूहिक प्रयास करना बहुत महत्वपूर्ण है, सदियों से जिसका व्यक्तियों और समुदायों को मूल्य-आधारित शिक्षा और आचरण प्रदान करने में प्रभावी योगदान रहा है।

   • G20 के सदस्य देशों को जब भी और जहां भी जरूरत होगी, पाठ्यचर्या और शैक्षणिक परिवर्तन करने होंगे।

9. **युवा ही LIFE का भविष्य हैं, इस बात को जानना:**

   • दक्षिणी विश्व के अधिकांश देशों में युवा आबादी प्रमुख है। इन देशों का भविष्य युवाओं के हाथ में है।

   • युवाओं को अपनी आकांक्षाओं को LiFE के साथ जोड़ने के लिए संवेदनशील बनाने की योजना और कार्यान्वयन प्राथमिकता पर किया जाना चाहिए।

10. **प्रकृति आधारित समाधान (NbS) को अपनाने के लिए बढ़ावा देना:**

   • एनबीएस (NbS) प्रसिद्ध तकनीकें हैं (उदाहरण के लिए, पवित्र परिदृश्य, पारंपरिक कृषि वानिकी आदि) जो स्थानीय स्तर के अनुकूलन पर और कई मामलों में, समुदायों के पारंपरिक ज्ञान और तकनीकों के निर्माण पर ज़ोर देती हैं।

   • जब उचित तरीके से कार्यान्वित किया जाता है, तो उनके कई गुना प्रभाव होते हैं जैसे कि एकीकृत वाटरशेड प्रबंधन जिसके परिणामस्वरूप मिट्टी और जल संरक्षण होता है, कृषि में सुधार होता है, उत्पादकता, वृक्ष आवरण बढ़ती है जिसके परिणामस्वरूप लोगो की आजीविका भी मजबूत होती है।

---

2 *https://pledge.mygov.in/life-movement/*

- एनबीएस जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए शमन बढ़ाने और अनुकूलन विकसित करने के लिए विकल्पों का एक लागत प्रभावी, विकेन्द्रीकृत और अनुकूलित गुलदस्ता है।

11. सभी आर्थिक क्षेत्रों में चक्रीय अर्थव्यवस्था सिद्धांतों के कार्यान्वयन को अनिवार्य बनाना:

- G20 के सदस्य देशों को अपनी अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में चक्रीय अर्थव्यवस्था सिद्धांतों को लागू करना अनिवार्य बनाना चाहिए। उन्हें अपनी मौजूदा नीतियों को तैयार करना चाहिए और/या उनमें आवश्यक बदलाव लाने चाहिए।
- यह रैखिक आर्थिक मॉडल सभी ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का लगभग 50 प्रतिशत उत्पन्न करता है। उत्पादन प्रक्रियाओं के माध्यम से सामग्रियों को रूपांतरित किया जाता है, उपयोग किया जाता है या उपभोग किया जाता है और पर्यावरण में छोड़ दिया जाता है।
- चक्रीय अर्थव्यवस्था अपशिष्ट को कम करके और सामग्री और प्रक्रिया लूप को बंद करके इन चुनौतियों का जवाब देती है, जिससे प्राकृतिक पूंजी का संरक्षण होता है।
- कुशल संसाधन प्रबंधन और टिकाऊ अपशिष्ट प्रबंधन पर परियोजनाओं को लागू करने वाले उद्योगों और व्यवसायों को ग्रीन क्रेडिट दिया जाना चाहिए जिसे कर लाभ, अनुदान या अन्य वित्तीय पुरस्कारों के लिए भुनाया जा सकता है।

12. LiFE के सभी क्षेत्रों में पानी का विवेकपूर्ण उपयोग और समान वितरण सुनिश्चित करना:

- .भारतीय दृष्टिकोण - पंचतत्त्वों में जल एक महत्वपूर्ण तत्व है।
- दैनिक उपयोग में पानी का पुन: उपयोग और पुनर्चक्रण करना ताजा पानी बनाने जैसा है।
- भोजन, फसलों आदि में कम पानी की खपत वाली पद्धतियों को अपनाना महत्वपूर्ण है।
- उन सभी क्षेत्रों में प्रभावी मांग पक्ष और आपूर्ति पक्ष प्रबंधन की आवश्यकता है जहां पानी एक अभिन्न घटक है।

<u>सदियों पुरानी परंपरा के पुनरुद्धार के माध्यम से सामुदायिक जल संरक्षण के रूप में LiFE</u>

"**हल्मा**" भारत में मध्य प्रदेश राज्य के झाबुआ जिले में भील समुदाय में एक सदियों पुरानी प्रथा है। यह बदले में कुछ भी उम्मीद किए बिना संकटग्रस्त लोगों की मदद करना है। झाबुआ जिले में धरती माता संकटग्रस्त थी । भील समुदाय की अंतर्निहित भावना थी कि 'वह प्यासी है'।

2010 से, शिवगंगा अभियान, एक सामुदायिक संगठन हर साल हलमा को बुला रहा है। इस आंदोलन में हजारों आदिवासी ग्रामीण भाग लेते हैं। वे मिट्टी के साधारण कार्य के लिए आवश्यक अपने औजार के साथ लाते हैं। वे पहाड़ी पर समोच्च खाइयाँ तैयार करते हैं, वृक्षारोपण के लिए गड्ढे खोदते हैं। यह सब समाज के लिए है, किसी व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं होता । ऐसी पहल उनके अपने गांवों में होती है। इस प्रयास से ज़मीनी स्तर पर बदलाव और सुधार देखने को मिला है जिसके परिणामस्वरूप जल उपलब्ध रहने लगा है ।

हमारे सहयोगी

इंस्टिट्यूट ऑफ सस्टेनेबिलिटी एंड डेवलपमेंट स्टडीज़

गोवर्धन इकोविलेज

पल्ले सृजन

इंडस यूनिवर्सिटी

पूर्णम् इकोविजन फाउंडेशन

स्कूल ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी

यूथ ऑफ इंडिया

रीड्स

उन्नत भारत अभियान (यूबीए)

प्रीमूव

एनडीडीसी

जेएसडब्ल्यू फाउंडेशन

पर्यावरण प्रज्ञा

दीनदयाल रिसर्च इंस्टिट्यूट

इंटरनेशनल सेंटर फॉर कल्चरल स्टडीज़

द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टिट्यूट